नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

कला-सृजन

(कला ,संस्कृति एवं ज्ञान को समर्पित संस्थान)

2025 अंक-1

naveensangeetcollege@gmail.com Contact – 9827461164

भाव राग मंजरी

(संकोच से स्वाभिमान तक)

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय ,दुर्ग द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को लेकर भाव - राग मंजरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया| इस अवसर पर मुख्य अतिथिं के रूप में डॉ सुशील चंद्र तिवारी, डायरेक्टर शंकरा प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी ,पूर्व अपर संचालक उच्च शिक्षा दुर्ग संभाग उपस्थित थे| डॉ तिवारी ने कहा कि इस महाविद्यालय ने शुरुवात में ही अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी है, ऐसे कार्यक्रम का आयोजन सुंदर सांस्कृतिक वातावरण तैयार करते हैं कला आत्मनिर्भर होना सिखाती हैं| महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ ऋचा ठाकुर ने इस आयोजन के मुख्य उद्देश्य को बताते हुए कहा कि शास्त्रीय प्रदर्शनात्मक कलाओ के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने के साथ ही मंच पर जाने की हिचक को भी दूर करना है इसीलिए इसकी टैग लाइन दी गयी है मंच प्रदर्शन - संकोच से स्वाभिमान तक | भाव-राग मंजरी कार्यक्रम लगातार किया जायेगा ,जो अध्ययनरत हैं उन सभी को मंच की मर्यादा भी बताई जाएगी| शासकीय वी वाय टी दुर्ग के इतिहास विभाग की प्राध्यापक डॉ ज्योति धारकर मैडम ने कहा कलाएं मानव होना सिखाती हैं | महाविद्यालय कार्यक्रम का शुभारम्भ पारंपरिक स्वरुप से माँ सरस्वती के वंदन एवं राज गीत अरपा पैरी के धार गीत से हुआ से हुआ | बीपीए प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने राग भुपाली में छोटा ख्याल की बंदिश प्रस्तुत की ,वहीं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने राग भीमपलासी में बड़ा ख्याल की मनभावन प्रस्तुति दी | भरतनाट्यम विभाग से रजत कुमार ने शिव वंदना भो-शम्भो नृत्त का शानदार प्रदर्शन किया | प्रथम वर्ष के श्री सुरेश बारसागाड़े ने फैज अहमद फैज की ग़ज़ल गायकी की | श्री जगदीश बामनिया ने अंग्रेजी साहित्य के इतिहास पर अपने विचार व्यक्त किये साथ ही अमन मेश्राम ने स्वलिखित कविता इंडियन आर्ट एंड कल्चर सुनाई | लोक संगीत विभाग के द्वितीय वर्ष द्वारा बिहाव गीत और प्रथम वर्ष ने सोहर गीत गाकर सुन्दर माहौल बना दिया | कार्यक्रम का अंत छात्राओं के मनभावन सुवा नृत्य से हुआ, नेपथ्य में छात्रो की आवाज़ ने चार चाँद लगा दिए | कार्यक्रम को सफल बनाने में अतिथि प्राध्यापको डॉ संगीता चौबे , गजेन्द्र यादव , सर्वजीत बाम्बेश्वर, अपराजिता चटर्जी का विशेष योगदान रहा | इस अवसर मीडियासाथी डॉ कल्पना अग्रवाल , डॉ के पद्मावती ,श्री धनराज भोयर , पालकगण उपस्थित थे | सभी इस कार्यक्रम की सराहना की औए ऐसे आयोजनों को करते रहने की बात कही | कार्यक्रम का सफल सञ्चालन डॉ निधि वर्मा एवं आभार प्रदर्शन मुख्य लिपिक श्री यशवंत साहू ने किया |

अभिव्यक्ति

डॉ ऋचा ठाकुर (प्राचार्य)

प्रदर्शनात्मक कलाओं में रोजगार के सृजन, कलाओ के उन्नयन एवं संरक्षण के दृष्टिकोण से उच्च शिक्षा विभाग नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय दुर्ग की स्थापना की गई। सीमित संसाधनों के बावजूद यह महाविद्यालय अपनी सांस्कृतिक धरोहर की सुरभि चहूँओर प्रकाशित कर रहा है। कला सृजन में महा० की विविध गतिविधियों और विद्यार्थियों की साधना का प्रतिबिंब परिलक्षित है । यहाँ अध्ययनरत कला-साधक, अपने सुर-ताल के संयोजन से नित नये आयाम गढ़ रहे हैं, जिनके बीच उम्र का कोई बंधन नहीं और सिखने की कोई सीमा नहीं है । मैं उन सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ । कला सृजन एक ऐसी पत्रिका है जो हमें संगीत महा विद्यालय की कला और सुंदरता को अनुभव करने में मदद करती है। यह महाविद्यालय, भारतीय संगीत की समृद्ध परंपरा, मधुरता और मौलिकता को बनाए रखते हुए, हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा का श्रेष्ठ वाहक सिद्ध होगा ।

संगीत महाविद्यालय द्वारा व्यक्तित्व विकास पर कार्यशाला

प्रदर्शनात्मक कलाएं जीवन का संचार करती हैं - डॉ. अजय सिंह

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय द्वारा प्रदर्शनात्मक कलाओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास पर कार्यशाला का रंगारंग समापन समारोह आयोजित किया गया । 28 अप्रैल से 3 मई तक आयोजित इस कार्यशाला को मुख्य रूप से सुगम संगीत , भरतनाट्यम के आधार बिंदु एवं संवाद सम्प्रेषण पर केन्द्रित किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ अजय सिंह ,प्राचार्य शासकीय वीवायटी स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग एवं विशिष्ट अतिथि सुप्रसिद्ध गायक श्री माधव राम सिन्हा उपस्थित थे । मुख्य अतिथि डॉ सिंह ने कहा की हर मनुष्य के भीतर मौजूद कला होती है और वे हमारे जीवन का संचार करती हैं । प्राच्य संगीत और वर्तमान संगीत के प्रदर्शन में भी जमीं आसमान का अंतर स्पष्ट दिखता है । विशिष्ट अतिथि श्री सिन्हा ने कहा कि आपने जितना भी सीखा है वो मन लगा कर आगे भी करते रहें । प्रतिभागी छात्र दुष्यंत ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा , हमने जी सीखा है वो साथ जीवन भर चलने वाला है , वरिष्ठ प्रतिभागी ममता सोनी ने इससे मिले कौशल को यादगार बताया । महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ ऋचा ठाकुर ने बताया कार्यशाला के दौरान सबने स्वर साधना में सप्त सुरों का अभ्यास किया , नृत्य की आधार मुद्राओ सहित भूमि प्रणाम, शिव स्तुति, श्लोक अभ्यास किया , अभिनय कौशल में संवाद सम्प्रेषण रसों के माध्यम से किया । अंतिम दिन सभी सीखे हुए कौशल को सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया । प्रतिभागियों द्वारा राज गीत , विवि का कुल गीत, सुरेश बारसागड़े और साथियों ने राग भैरव में छोटा ख्याल , सुमन ने साईं भजन ,तथा अमन, तामेश्वर ,कुनाल ,कल्याण ,पंकज ने फ़िल्मी गीत , विवेक मौर्य ने गिटार और श्री गुलशन कुमार ने तबले में संगति दी । नृत्य में भूमि प्रणाम , शिव स्तुति ,आरंभिक अड़वू, प्रथम पूज्य गणेश और नटवर कृष्ण को समर्पित श्लोक की प्रस्तुति दी । मौसमी द्वारा भरतनाट्यम की अष्टपदी की गयी वही किशन साहू ने विभिन्न कलाकारों की आवाज़ की मिमिक्री से समां बाँध दिया प्रतिभागियों द्वारा हसदेव जंगल बचाओ पर आधारित,श्री केवेंद्र साहू द्वारा निर्देशित लघु नाटक की शानदार प्रस्तुति दी । नाटक के माध्यम से उन्होंने पर्यावरण संरक्षण का सराहनीय सन्देश दिया । मात्र एक दिन की तैयारी में सबने अपनी प्रतिभा और कौशल का शानदार प्रदर्शन किया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा, महाविद्यालय के कार्यालय प्रमुख श्री यशवंत साहू का रक्त दान जैसे सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए प्रशस्ति पात्र देकर सम्मानित किया गया । वे प्रति चार माह में जिला अस्पताल जाकर स्वस्फूर्त रक्तदान जैसा महान कार्य करते हैं । कार्यक्रम का सञ्चालन सुमन जोशी एवं राजेश्वरी ने किया । सभी प्रतिभागियों का सहभागिता प्रमाण पत्र दिया गया।

संगीत महाविद्यालय में महिला दिवस का आयोजन

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय , दुर्ग द्वारा महिला दिवस का शानदार आयोजन किया गया । इस वर्ष अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस 2025 की थीम एक्सेलेरेटे एक्शन अर्थात महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने और जागरूकता पैदा करने को लेकर अब कार्य में तेजी लाना है । इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गए । महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ ऋचा ठाकुर ने कहा कि अब समय स्त्री और पुरुष के कंधे से कन्धा मिला कर काम करने का है, साथ ही स्वरचित कविता भी पढ़ कर सुनाई । डॉ निधि वर्मा अतिथि प्राध्यापक हिंदी ने महिलाओ के सशक्तिकरण पर अपनी बात रखी और श्री तपननाथ की लिखी कविता नारी शक्ति का जयगान का वचन किया । डॉ संगीता चौबे अतिथि प्राध्यापक भरतनाट्यम ने पिंक मूवी की प्रेरणास्पद पंक्ति तू खुद की तलाश में निकल पर भाव नृत्य प्रस्तुत किया । श्री गजेन्द्र यादव अतिथि प्राध्यापक शास्त्रीय गायन ने कहा कि जननी के भाव उसकी संतान में परिलक्षित होते हैं और माँ पर गीत प्रस्तुत किया कु स्वाति, वंदना और सुषमा आर्य ने कवितापाठ किया । श्री सुरेश बारसागड़े ने मराठी भाषा में गीत प्रस्तुत कर माहौल सुंदर बना दिया । पंकज ने छत्तीसगढ़ी भाषा में माँ बेटी के भावुक गीत गाया । केवेंद्र साहू ने महिला दिवस के इतिहास के इतिहास को बताया । कार्यक्रम का सफल सञ्चालन सर्वजीत बम्बेश्वर अतिथि प्राध्यापक लोक संगीत एवं आभार प्रदर्शन श्री यशवंत साहू कार्यालय प्रमुख ने किया । छात्राओं ने बड़े उत्साह के साथ कार्यक्रम में सहभागिता की |

संगीत महाविद्यालय में वीर बाल दिवस मनाया गया

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय द्वारा वीर बाल दिवस का आयोजन किया गया | इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय “देश के स्वाभिमान के लिए वीर बालकों का योगदान“ रखा गया | महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ ऋचा ठाकुर ने कहा कि अंतिम सिख गुरु गोविंद सिंह के छोटे छोटे बच्चों ने अपनी आस्था की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर कर दिए थे आज की पीढ़ी को उनसे परिस्थितियों का किस प्रकार निडर होकर सामना करना चाहिए सीखना चाहिये | कार्यक्रम का संयोजन डॉ निधि वर्मा ने किया |इस अवसर पर महाविद्यालय स्टाफ उपस्थित था |भाषण प्रतियोगिता में निम्न विद्यार्थियों को स्थान मिला :

1. प्रथम - अमन साहू (बीपीए-I)
2. द्वितीय - वंदना देशमुख (बीपीए-I)
3. तृतीय - सौरभ साहू (बीपीए-I)
4. सांत्वना - नीलम साहू (बीपीए-I)

संगीत महाविद्यालय दुर्ग ने दी उस्ताद ज़ाकिर को श्रद्धांजलि

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय परिवार ने विश्वप्रसिद्ध कलाकार तबला सम्राट उस्ताद जाकिर हुसैन को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की | इस शोक के अवसर पर उस्ताद हुसैन के चित्र पर माल्यार्पण एवं मौन होकर संवेदना व्यक्त की गयी, इसके साथ ही सुर ताल के माध्यम से स्वरांजलि दी गयी |प्राचार्य डॉ ऋचा ठाकुर ने कहा कि उस्ताद जाकिर हुसैन ना केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व के ख्यातिनाम कलाकार थे ,उनकी अंगुलियाँ मानो तबले पर नृत्य किया करती थीं | विद्यार्थियों को भी सर्वप्रथम ताल को साधना चाहिए | शहर के युवा तबला कलाकार श्री अरुण साहू ने अपने वादन से उस्ताद की नमन किया | उन्होंने पेशकार , दिल्ली घराने का कायदा, टुकड़ा और रेला वादन से मंत्रमुग्ध कर दिया | महाविद्यालय के गायन विभाग के अतिथि प्राध्यापक गजेन्द्र यादव ने उनके साथ झपताल में बंदिश औत तराना प्रस्तुत कर दिवंगत कलाकार को भावभीनी श्रद्धांजलि दी | उन्होंने उस्ताद जी के कला के योगदान को बताया | छात्र तुकेश्वर ने उनको समर्पित स्वलिखित कविता का वाचन किया ,दीपिका ने उनका जीवन परिचय दिया वहीं वंदना ने खुबसूरत कविता प्रस्तुत की | जगदीश बामनिया ने उस्ताद जी की कई कलाओं में सिद्धहस्तता को बताया | इस अवसर कार्यालय प्रमुख यशवंत साहू ,डॉ निधिं वर्मा ,डॉ संगीता चौबे ,सर्वजीत ब्रम्बेश्वर, तपन कुमार , केवेंद्र सहित छात्र छात्राएं उपस्थित थे |

संविधान दिवस

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय, दुर्ग द्वारा संविधान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर शपथ, पोस्टर, कविता, संभाषण आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये। महा. की प्राचार्य डॉ. ऋचा ठाकुर ने संविधान के इतिहास पर प्रकाश डाला। बी. पी. ए. प्रथम वर्ष की छात्रा वंदना देवांगन ने पोस्टर के माध्यम से संविधान को अभिव्यक्त किया,साथ ही उस पर अपने विचार व्यक्त किये। बी.पी. ए द्वितीय वर्ष श्री तिलक राम वर्मा ने संविधान के मूल उद्देश्य के विषय में बताया, वहीं बी०पी. ए प्रथम वर्ष की राजेश्वरी साहू ने कविता प्रस्तुत की। महाविद्यालय के मुख्य लिपिक श्री यशवंत साहू ने संविधान की मूल उद्देशिका को पढ़कर सुनाया । इस अवसर पर प्राचार्य मैडम ने सभी को शपथ दिलाई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. निधि वर्मा एवं आभार सुश्री अपराजिता चटर्जी ने किया । इस अवसर पर श्री तपन कुमार नाथ,,श्री धनराज भोयर ,सर्वजीत ब्रम्हेश्वर, गजेंद्र यादव, डॉ. संगीता चौबे ,जगदीश बामनिया सहित छात्र-छात्रायें उपस्थित थे

संगीत महाविद्यालय में नृत्य दिवस

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय में व्यक्तित्व विकास पर कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है । कार्यशाला के दूसरे दिन विभिन्न गतिविधियों के साथ साथ अन्तराष्ट्रीय नृत्य दिवस के अवसर पर सुप्रसिद्ध नर्तक एवं संस्कृत नाटको के सिद्धहस्त कलाकार श्री प्रेमचंद होम्बल को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी । स्व. होम्बल ने कलाक्षेत्र चेन्नई से श्रीमती रुक्मिणी अरुन्देल से नृत्य ग्रहण की एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय उनकी कर्मस्थली रही । देश विदेश में आपने संस्कृत नाटकों को भरतनाट्यम शैली में प्रस्तुत किया । दिनांक 28 अप्रैल से सभी आयु वर्ग के लिए आयोजित यह कार्यशाला रचनात्मकता और व्यक्तित्व विकास का एक अनूठा मिश्रण प्रदान कर रही है , जिसके अंतर्गत सुगम संगीत का मूल , भरतनाट्यम का आधार और अभिनय के माध्यम से भाषा और संवाद सम्प्रेषण के माध्यम से विकास पर कार्य किया जा रहा है । दुर्ग शहर के प्रसिद्ध कलाकार श्री माधव राम सिन्हा जी द्वारा आरंभ में सरगम का अभ्यास कराया गया और साथ ही सुगम गायन की विशेषता बताई गयी । श्री गुलशन कुमार ने टेबल में संगति दी । प्राचार्य डॉ ऋचा ठाकुर द्वारा भरतनाट्यम नृत्य की आधार मुद्राओं को बताया गया । युवा रंगकर्मी केवेंद्र साहू ने अभिनय कौशल की बारीकियो को बताया । । कार्यालय प्रमुख यशवंत साहू ने प्रेमचंद जी की कलायात्रा को बताया । महाविद्यालय परिवार द्वारा उनके लिए प्रार्थना सभा रखी गयी ।

संगीत महाविद्यालय ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर दी श्रद्धांजलि

संगीत महाविद्यालय परिवार ने महान स्वतन्त्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस को उनकी जयंती पर भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की । इस अवसर पर नेताजी के चित्र पर माल्यार्पण किया गया एवं ही देशभक्ति गीत के माध्यम से उन्हें याद किया गया। प्राचार्य डॉ. ऋचा ठाकुर ने कहा कि नेताजी विशाल शख्सियत थे जिन्होंने न केवल स्वतंत्रता की मशाल प्रज्जवलित की बल्कि देश के युवाओं में भी स्वतंत्रता के लिये जोश भर दिया। महाविद्यालय के गायन विभाग के अतिथि प्राध्यापक गजेंद्रयादव ने मेरा रंग दे 'बसंती चोला' गीत गाकर नेताजी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि दी जिसमें उनका साथ गायन विभाग के विद्यार्थियों ने भी दिया। संगीता चौबे ने भी नेताजी के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वो आज भी प्रासंगिक हैं । विद्यार्थियों में बी पी ए द्वितीय की छात्रा राधा ने नेताजी के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर समस्त छात्र छात्राओं सहित कार्यालय प्रमुख यशवंत साहू, , सर्वजीत बम्बेश्वर एवं धनराज भोयर उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ संगीता चौबे एवं आभार प्रदर्शन सर्वजीत बाम्बेश्वर के द्वारा किया गया।

प्रयागराज कुम्भ में नृत्य नाटिका की प्रस्तुति

कुंभ की कहानी नृत्य की जुबानी

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय, दुर्ग के भरतनाट्यम विभाग में कार्यरत डॉ संगीता चौबे (अतिथि प्राध्यापक भरतनाट्यम) ने अपने समूह के साथ प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ की सांस्कृतिक संध्या में अपनी नृत्य प्रस्तुति दी। महाकुंभ के बिरसा मुंडा मंच पर इन्होंने " कुंभ की कहानी नृत्य की जुबानी " शीर्षक से नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी। इस नृत्य नाटिका में कुंभ का आयोजन कैसे प्रारंभ हुआ और उसका क्या आध्यात्मिक महत्त्व है , इस पूरी कहानी को नृत्य के माध्यम से बताया गया। इसके लिये डा. संगीता चौबे ने भरतनाट्यम के साथ कथक नृत्य विधा का भी समिश्रण किया। प्रयागराज कुंभ मेंदेश विदेश से आए दर्शकों ने इस नृत्य नाटिका में खूब सराहा और तालियों से अपनी खुशी जाहिर की। इस नृत्य नाटिका की संरचना , संगीत एवं विषय वस्तु सभी कुछ डा. संगीता चौबे ने निर्देशित किया। इस अदभुत प्रस्तुति के लिये उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक विभाग द्वारा, अंग वस्त्र, स्मृति चिन्छ एवं प्रमान-पत्र देकर सम्मानित डिया गया। इस इस नृत्य नाटिका के प्रदर्शन में डा. संगीता चौने क साथ डाली ऊके, वाणी वर्मा एवं श्वेता श्रीवास ने दिया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ ऋचा ठाकुर एवं समस्त महाविमालय परिवार ने इस सफल प्रदर्शन के लिये बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

संगीत महाविद्यालय में मानवाधिकार दिवस आयोजित

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय दुर्ग में विश्व मानवाधिकार दिवस का आयोजन किया गया | इस अवसर विद्यार्थियों द्वारा लघु नाटक, शास्त्रीय नृत्य, भाषण आदि की प्रस्तुति की गयी | महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ ऋचा ठाकुर ने मानव अधिकारों के आरंभ करने के उद्देश्य को बताया एवं सभी को इसके संरक्षण की शपथ दिलाई । छात्र छात्राओं ने श्री तपन कुमार के निर्देशन में एक लघु नाटक का प्रदर्शन किया जो मूलतः जमीदार द्वारा मजदूर के शोषण पर आधारित था । प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थी तामेश्वर साहू, पंकज, श्वेता, वंदना, राजेश्वरी, तुकेश्वर एवं सौरभ थे। जिसे सभी ने सराहा। इस अवसर पर कन्या महाविद्यालय दुर्ग की छात्राओं निशा, मौसमी, उर्वशी, दामिनी, हेमा ने भरतनाट्यम के मार्गम अलारिपू एवं उप शास्त्रीय नृत्य की मनभावन प्रस्तुति दी। बीपीए द्वितीय वर्ष की श्रीमती सीमा ने मानव अधिकारों के मूल सिद्धांतो को बताया, प्रथम वर्ष के केवेंद्र ने आत्म अधिकार के लिए स्व प्रेरित होने की बात कही, वहीं तामेश्वर ने पशु अधिकारों पर ध्यान केन्द्रित किया | श्री तपन कुमार ने नाटक के कथानक को बताया, सूत्रधार के रूप में श्वेता ने नाटक का विश्लेषण किया। कार्यक्रम का सञ्चालन डॉ निधि वर्मा ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार उपस्थित था ।

युवा उत्सव में संगीत महाविद्यालय के विद्यार्थियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

नवीन संगीत शासकीय महाविद्यालय, दुर्ग के बी.पी.ए. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा आयोजित गीत-नृत्य प्रतियोगिता में धमधा विकासखंड एवं जिला स्तर पर अपने अद्वितीय प्रदर्शन से महाविद्यालय का मान बढ़ाया।

इस कार्यक्रम में सामूहिक लोकगीत की प्रस्तुति में प्रतिभागियों - सुमन जोशी, राजेश्वरी साहू, वंदना देशमुख, मंजू विश्वकर्मा, अमन साहू, सुभाष साहू, टुकेश्वर निर्मलकर, धर्मदास मानिकपुरी, मनीष साहू** ने विकासखंड स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। कविता पाठ में टुकेश्वर निर्मलकर ने विकासखंड स्तर पर प्रथम स्थान हासिल कर अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया। व्यक्तिगत लोकगीत श्रेणी में सुभाष साहू ने विकासखंड स्तर पर प्रथम स्थान और जिला स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वहीं राजेश्वरी साहू ने विकासखंड स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

विद्यार्थियों ने छत्तीसगढ़ी लोकगीतों और कविताओं के माध्यम से राज्य की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं को सजीव किया। उनकी प्रस्तुतियों ने दर्शकों और निर्णायकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिससे उन्हें सराहना और प्रशंसा प्राप्त हुई। यह उनकी कड़ी मेहनत और शिक्षकों के समर्पित मार्गदर्शन का परिणाम है। । विद्यार्थियों ने इन उपलब्धियों का श्रेय अपने शिक्षक श्री सर्वजीत बम्बेश्वर एवं सभी शिक्षकों को दिया । जो न केवल महाविद्यालय के लिए गर्व का विषय हैं, बल्कि यह भी सिद्ध करती हैं कि वे भविष्य में और भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगे। प्राचार्य डॉ ऋचा ठाकुर ने कहा कि इन विद्यार्थियों को अधिक से अधिक अवसर प्रदान किए जाएंगे, जिससे वे अपनी प्रतिभा को और निखार सकें। महाविद्यालय के डॉ निधि वर्मा,डॉ संगीता चौबे, गजेंद्र यादव, सुश्री अपराजिता कार्यालय प्रमुख यशवन्त साहू, धनराज भोयर ने इन विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कोमल गांधार नाटक की भाव प्रवण प्रस्तुति

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय, दुर्ग एवं शास्कीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग की साहित्यिक एवं नाट्य समिति के संयुक्त तत्वाधान में रायपुर की प्रमुख नाट्य संस्था अग्रगामी द्वारा शंकर शेष लिखित प्रसिद्ध नाटक कोमल गांधार का मंचन वीर नारायण सभागार में किया गया । कलाकारों की भावपूर्ण अभिव्यक्ति ने सम्पूर्ण सभागार को भावुक कर दिया । विशेष तौर पर गांधारी और युद्ध भूमि में घायल पड़े दुर्योधन के मार्मिक संवाद ने रोमांच उत्पन्न कर दिया । सभी कलाकारों ने अपने चरित्र के साथ न्याय किया । ऐसा मंचन इस क्षेत्र में बहुत दिनों बाद देखने को मिला । गौरतलब है कि कोमल गांधार की स्व रिज़वी साहब के निर्देशन में अनेक स्थानों में पुरस्कार और प्रशंसा मिली है । इस अवसर पर वरिष्ठ रंगकर्मी स्व जलील रिज़वी के रंगमंच को दिए अमूल्य योगदान को याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की गयी साथ ही उनकी धर्मपत्नी एवं वरिष्ठ कलाकार श्रीमती नूतन रिज़वी का सम्मान किया गया । मुख्य अतिथि वी वाय टी दुर्ग के प्राचार्य डॉ अजय सिंह ने कहा कि रंगमंच के प्रति नूतन मैडम का झुकाव अभिनंदनीय है । नाटक के प्रति समर्पण को मै प्रणाम करता हूँ । संगीत महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ ऋचा ठाकुर ने अपने अनुभव को साझा करते हुए युवाओं में नाटक के प्रति रुझान जागृत करने के लिए प्रोत्साहित किया । श्रीमती नूतन रिज़वी ने अपनी नाट्य यात्रा को बताया । विशेष अतिथि डॉ कुन्ज बिहारी शर्मा पूर्व प्राचार्य ने रंगकर्म की विशेषताओं पर अपनी बात कही । नाटक देखने पधारे नाट्यकर्मी श्री मणिमय मुखर्जी एवं विद्या गुप्ता ने इस मंचन को अत्यधिक सराहा । अग्रगामी संस्था के कलाकार प्रकाश खांडेकर, शेखर शुक्ल ,चंद्रलोक मिश्र, महेंद्र साहू अलका दुबे ,सौम्या रिज़वी ने अपने अभिनय कौशल से सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया । शहर के नामचीन कलाकार सुचित्रा मैडम, राजेश श्रीवास्तव, गिल्बर्ट ,संजय पांडे ,सरिता श्रीवास्तव ,सरिता साहू रोशन गडेकर ,डॉ अनुपमा कश्यप, प्रशांत दुबे तरुण साहू आदि उपस्थित थे । कार्यक्रम का सन्चालन डॉ निधि वर्मा ने किया तथा गजेन्द्र यादव , सर्वजीत बाम्बेश्वर, संगीता ,अपराजिता, धनराज भोयर का विशेष सहयोग रहा ।

इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ शैक्षणिक भ्रमण

पोषक विद्यालय संपर्क अभियान

कला परंपरा

जागरूकता कार्यक्रम

सामाजिक जिम्मेदारी

सांस्कृतिक जिम्मेदारी

महाविद्यालय परिवार

रचनात्मक स्पंदन

जगदीश बामनिया

तपन कुमार नाथ

मां की याद में

मां तू मुझे छोड़कर क्यों चली गई
क्या छोटी सी भूल को कोई दिल से लगाता है,
अपने लाल को कोई बिना मां का बनाता है,
तुमने तो बचपन में मेरी नादानियों को भुलाया है,
पत्थर बन क्या कोई औलाद को भुलाता है।
मां अपनी अंगुली पकड़ मुझे चलना सिखाया है,
ममता की छांव तले मुझे
जीना सिखाया है,
आंसुओं में भीगा पल्लू
मेरे माथे पर रखकर
रात रात जागकर मेरे ताप को भगाया है।
यादकर मां जब मैं रूठ जाया करता था,
तुझे परेशान करने मैं छुप जाया करता था,
तू बेचैन आंखों से मुझे इधर उधर ढूंढती थी
मैं कातर आंखों से तुम्हें
छुपके देखा करता था
थककर और हारकर तुम रो दिया करती थी,
आंखों से रिमझिम बारिश होने लगती थी
तुम्हें रोता देख मेरा बचपन भी रो पड़ता था
मां कहकर तुझसे मैं लिपट जाया करता था।
भगवान कैसा होता है
मैने तो नही देखा
लेकिन पैदा होते ही मैने सिर्फ तुझे ही देखा,
यदि डांटती पुचकारती,हंसती हंसाती,
छवि है उस भगवान की,
तो मां सचमुच तुम्हीं हो
उस भगवान की रूपरेखा।
मैं हजार बार रूठा,हजार बार माना,
तेरे बहते हुए आंसुओं को तेरे पल्लू से पोंछा
आज पहली बार रूठी हो और मैं मना रहा हूं,
आजा मां वापस और फिर लौट कर ना जाना।

महाविद्यालय की तपस्वना

जहाँ हर सुबह होती है सुरों की पूजा, जहाँ कला बने हर मन की आराधना ।
वो कोई साधारण सा स्थान नहीं, है मेरे महाविद्यालय की तपस्वना।
तानपुरा की गूंज अति प्रिय लागे, गुरु के स्वर से मन अनुरागे।
रागों में गहराई है जीवन की, हर गीत से सजीव आत्मा जागे।
नृत्य की रेखाएँ ज्यों बोले कविता, हर चक्र, मुद्रा सजीव श्लोकिता।
घुंघरू की झंकार मीरा की भक्ति, नयन, चरण संग करे एक युक्ति।
लोकसंगीत की बहती मीठी बयारें, गाँव-गली की स्मृतियाँ जो सँवारे।
कभी बिरहा, कभी फागुन की रचना, संस्कारों का ये है समृद्ध खज़ाना।
गुरुजन दिखाएँ प्रेम से राहें, संस्कारों से संवरी ये बाँहें।
विद्यार्थी बने कलाकार सच्चा, जिनमें बसता संगीत है सच्चा।
यह मेरा तीर्थ, मेरा है गौरवालय, हृदय का सबसे प्यारा सुंदरालय।
यहीं है मेरा आत्मिक संसार, नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय

गायन में मेरी रुचि और इसे अब अपनाने का मेरा सफर

श्री सुरेश बारसागड़े

गायन मेरे जीवन का वह सपना है जिसे मैंने वर्षों तक अपनी आँखों में संजोकर रखा। बचपन से ही मुझे गाने का बेहद शौक था। जब भी कोई सुंदर गीत सुनता, तो मन करता कि मैं भी उसी तरह गा सकूँ। लेकिन ज़िंदगी की राहें हमेशा आसान नहीं होतीं। बीते कई वर्षों तक, मैं अपनी आर्थिक स्थिति और पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते इस रुचि को समय और अवसर नहीं दे पाया।

जीवन की ज़िम्मेदारियाँ – परिवार को संभालना, बच्चों की पढ़ाई, रोज़गार की चिंता – इन सबके बीच मेरा गायक बनने का सपना धीरे-धीरे मन के किसी कोने में दब गया। पर दिल से गायन के प्रति लगाव कभी कम नहीं हुआ। जब भी मौका मिलता, मैं गुनगुनाता रहता था। संगीत मेरे लिए हमेशा एक संबल रहा – दुख में सुकून देने वाला और खुशी में साथ निभाने वाला। कुछ साल पहले मेरी ज़िंदगी में एक नया मोड़ आया जब जब मैंने एक निजी संस्थान में प्रवेश लिया। यह मेरे लिए एक उम्मीद की किरण जैसा था।

मैंने वहां दाखिला लिया और कुछ वर्षों तक संगीत की विधिवत शिक्षा ली। यह अनुभव मेरे लिए बेहद महत्वपूर्ण रहा। यहाँ मैंने न केवल सुर और ताल की बारीकियाँ सीखी, बल्कि अपने भीतर के आत्मविश्वास को भी जगाया। मेरी संगीत यात्रा में मेरे आदरणीय गुरूजी श्री माधो राम सिन्हा जी का सबसे अधिक प्रभाव रहा है। उनके मार्गदर्शन के लिए मैं सदैव आभारी रहूँगा। इस यात्रा में मेरी पत्नी का आवश्यक सहयोग मेरे लिए बहुत सहायक रहा है| आज, 53 वर्ष की उम्र में, मैं गर्व से कह सकता हूँ कि मैं अपने सपने को जी रहा हूँ।

मैंने *शासकीय नवीन महाविद्यालय* में संगीत विषय में स्नातक डिग्री के लिए दाखिला लिया है। यह निर्णय मेरे लिए केवल एक शैक्षणिक कदम नहीं, बल्कि वर्षों के सपने और संघर्ष की परिणति है। इस उम्र में फिर से विद्यार्थी बनना आसान नहीं होता, लेकिन संगीत के प्रति मेरा प्रेम मुझे हर चुनौती से लड़ने की शक्ति देता है। अब मैं नियमित रूप से रियाज़ करता हूँ, संगीत की नई विधाओं को सीखने की कोशिश करता हूँ और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग भी लेता हूँ। यह मेरे लिए सिर्फ शौक नहीं, बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति और आत्म-संतोष का साधन बन चुका है।

मैं आज यह कहना चाहता हूँ कि सपनों की कोई उम्र नहीं होती। चाहे जीवन में कितनी भी देर हो जाए, अगर मन में सच्ची लगन हो, तो कोई भी सपना पूरा किया जा सकता है। मेरे लिए गायन केवल एक कला नहीं, बल्कि आत्मा की आवाज़ है – और अब मैं इसे पूरे समर्पण के साथ जी रहा हूँ। मुझे नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय का छात्र होने पर गर्व है, और मैं महाविद्यालय के सभी छात्रों के उज्जवल भविष्य और संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्टता की कामना करता हूँ।

केवेंद्र कुमार साहू

मैं लड़का हूँ रोना मेरा अधिकार नहीं

मैं कुछ भी माँगू मिलता मुझको हर बार नहीं,

सब कहते हैं मैं लड़का हूँ रोना मेरा अधिकार नहीं।

जब जन्म हुआ मेरा तो पहली बार मैं खुल के रोया था,

सबकी गोदी में खेला था सबकी बाहों में सोया था,

बचपन जो उसके बाद मिला वो एक मौसम सा गुज़र गया,

ज़िम्मेदारी की आँधी में फिर धीरे – धीरे मैं बिखर गया।

ना पापा थे सरकारी नौकरी वाले, और ना था व्यापार कोई।

सब कहते हैं मैं लड़का हूँ रोना मेरा अधिकार नहीं।

दो वक्त की रोटी भी मुश्किल थी उस घर की मैं उम्मीद बना,

कल तक आँखो का तारा था, ग़ैरों की आज ख़रीद बना,

क्या करता भी, मैं था अबोध दुनियादारी का भान नहीं,

पर इतना समझ बैठा हूँ, मैं हातिम या शक्तिमान नहीं।

ज़िम्मेदारी ना उठा सकूँ मैं इतना भी तो लाचार नहीं,

सब कहते हैं मैं लड़का हूँ रोना मेरा अधिकार नहीं।

जो उम्र कलम कागज़ की थी उस उम्र में ताने सहता हूँ,

मैं ढाबों पर मिल जाऊंगा छोटू के नाम से रहता हूँ,

मैं कड़क धूप, जलती धरती, मिट्टी में और पसीने में,

बारिश तो कीचड़ ही देती है, राहत ना सर्द महीने में।

मैं ही भविष्य हूँ भारत का, कोई एक मेरा किरदार नहीं,

सब कहते हैं मैं लड़का हूँ रोना मेरा अधिकार नहीं।

ज्यों बड़ा हुआ दुनिया समझी, पैरों में तब तक बेड़ी थी,

वो भी दिन आया किसी ने पहली बार निगाहें छेड़ी थी,

बचपन से केवल प्रेम सीखा, छल कपट मुझे ना आता था,

और ये ठहरा वो खेल जहाँ सच्चा ही ठोकर खाता था,

दुत्कारें सह करके भी तो, मिलता है अपना प्यार नही।

सब कहते हैं मैं लड़का हूँ रोना मेरा अधिकार नहीं।।

डॉ. निधि वर्मा
सहायक प्राध्यापक

संगीत: हिंदी साहित्य की आत्मा

संगीत और साहित्य, दोनों ही मानवीय संवेदनाओं की सबसे सुंदर अभिव्यक्तियाँ हैं। जब ये दोनों एक-दूसरे से मिलते हैं, तो एक ऐसी दिव्यता जन्म लेती है जो न केवल सुनने वाले के मन को छूती है, बल्कि आत्मा को भी शुद्ध कर देती है। हिंदी साहित्य में संगीत का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक रहा है। चाहे वह भक्ति काव्य हो, रीति काल का श्रृंगार रस, या आधुनिक युग की सामाजिक चेतना - हर युग में संगीत ने साहित्य को गहराई और गरिमा प्रदान की है।

भक्ति काल और संगीत का संगम:

भक्ति आंदोलन के कवियों - तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, कबीर - ने अपने काव्य में संगीत का अद्भुत प्रयोग किया। मीराबाई के पदों में भक्ति के साथ-साथ राग की गूंज स्पष्ट सुनाई देती है। उनका "पायो जी मैंने राम रतन धन पायो" जैसे पद आज भी शास्त्रीय संगीत की बंदिशों में गाए जाते हैं। सूरदास की कृष्ण भक्ति में निहित भाव और लय उनकी कविता को संगीतात्मक बना देते हैं - उनके पद स्वाभाविक रूप से गाए जाने योग्य हैं।

कबीर: शब्दों के संगीतमय संत:

कबीर के दोहे गेय शैली में रचे गए हैं। उन्होंने लोकधुनों और निर्गुण भक्ति के तत्वों को मिलाकर एक ऐसी रचनात्मकता प्रस्तुत की जो आज भी 'कबीर भजन' के रूप में लोकगीतों का अभिन्न अंग है। उनका काव्य सहज, सरल, परंतु अत्यंत गहरा है, जो संगीत के माध्यम से जनमानस तक सीधे पहुँचता है।

रीति काल में संगीत और श्रृंगार:

रीति काल के कवियों - केशव, बिहारी, घनानंद - ने श्रृंगार रस के वर्णन में लयात्मकता और ताल का अत्यधिक प्रयोग किया। बिहारी के दोहे छंद की दृष्टि से इतने परिपूर्ण हैं कि उन्हें 'रस, छंद और अलंकार' का समन्वय कहा गया है। ऐसे काव्य को बिना संगीत के पढ़ना या सुनना अधूरा अनुभव होता है।

आधुनिक युग में संगीत और साहित्य:

आधुनिक हिंदी साहित्य में भी संगीत की उपस्थिति कम नहीं हुई है। हरिवंश राय बच्चन की "मधुशाला" कविता इतनी लयात्मक है कि वह स्वतः संगीत में ढल जाती है। इसी तरह निराला, महादेवी वर्मा, और नागार्जुन की रचनाएँ भी संगीत की लय से भरी हुई हैं - जहाँ संगीत अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि काव्य का अविभाज्य अंग बन जाता है।

लोक साहित्य और संगीत:

लोक साहित्य में तो संगीत आत्मा के रूप में मौजूद है। लोकगीत, लोकनाट्य, आल्हा, बिरहा, कजरी, ठुमरी - ये सब साहित्य की ही शाखाएँ हैं जो संगीत में रची-बसी हैं। लोक कवियों की वाणी में संगीत की सहजता और सरलता साहित्य को जन-जन तक पहुँचा देती है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य में संगीत मात्र सहायक तत्व नहीं, बल्कि एक जीवंत ऊर्जा है। वह भावनाओं को गति देता है, शब्दों में आत्मा भरता है, और साहित्य को जीवंतता प्रदान करता है। चाहे वह तुलसी का रामचरितमानस हो या बच्चन की मधुशाला - जब शब्द संगीत में ढलते हैं, तब वे अमर हो जाते हैं। इसीलिए कहा गया है: "जहाँ शब्द मौन हो जाएँ, वहाँ संगीत बोलता है - और जहाँ साहित्य गूंजे, वहाँ संगीत झंकृत हो उठता है।"

पर्यावरण और संगीत का संबंध

यशवंत कुमार साहू
(कार्यालय प्रमुख)

पर्यावरण और संगीत, दोनों ही मानव जीवन के अभिन्न अंग हैं। ये दोनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं, क्योंकि संगीत प्रकृति से प्रेरणा लेता है और पर्यावरण को संरक्षित करने में भी योगदान दे सकता है। यह लेख पर्यावरण और संगीत के बीच के इस अनूठे संबंध को समझने का प्रयास करता है।

प्रकृति से संगीत की प्रेरणा

संगीत का मूल स्रोत प्रकृति ही है। पक्षियों का चहचहाना, हवा का सरसराना, नदियों का कल-कल बहना, और समुद्र की लहरों का शोर–ये सभी प्राकृतिक ध्वनियाँ संगीत की प्रेरणा बनती हैं। प्राचीन काल से ही मानव ने इन ध्वनियों को सुनकर और अनुकरण करके संगीत की रचना की। भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का संबंध प्रकृति के विभिन्न पहलुओं से है। उदाहरण के लिए, राग मेघ मल्हार बारिश और बादलों से प्रेरित है, जो सुनने वालों में प्रकृति के प्रति गहरी भावना जागृत करता है।

विश्व के विभिन्न संस्कृतियों में भी प्रकृति और संगीत का यह संबंध देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए, नेटिव अमेरिकन संगीत में प्राकृतिक तत्वों जैसे हवा, पानी और पशु-पक्षियों की ध्वनियों का समावेश होता है। यह संगीत न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि पर्यावरण के प्रति सम्मान और एकता की भावना भी जगाता है।

पर्यावरण संरक्षण में संगीत की भूमिका

संगीत एक शक्तिशाली माध्यम है, जो लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित कर सकता है। गीतों, भजनों और संगीतमय प्रदर्शनों के माध्यम से पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाई जा सकती है। उदाहरण के लिए, विश्व स्तर पर कई कलाकारों ने पर्यावरणीय मुद्दों जैसे जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, और प्रदूषण पर गीत लिखे हैं। बॉब डायलन का गाना *"A Hard Rain's A-Gonna Fall"* और माइकल जैक्सन का *"Earth Song"* पर्यावरण के प्रति चिंता और जिम्मेदारी का संदेश देते हैं।

भारत में भी कई लोक गीत और भजन पर्यावरण संरक्षण से जुड़े हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान के मांड गायन और बिहार के लोकगीतों में नदियों, वृक्षों और प्रकृति की सुंदरता का गुणगान किया जाता है, जो लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाता है।

संगीत और पर्यावरण का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

पर्यावरण और संगीत दोनों ही मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्राकृतिक वातावरण में संगीत सुनना या बजाना तनाव को कम करता है और मन को शांति प्रदान करता है। अध्ययनों के अनुसार, प्रकृति की ध्वनियों के साथ संगीत सुनने से हृदय गति और रक्तचाप नियंत्रित होता है। उदाहरण के लिए, जंगल में पक्षियों की आवाज़ के साथ शास्त्रीय संगीत या ध्यान संगीत सुनना मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है।

पर्यावरणीय संगीत और नवाचार

आजकल, पर्यावरणीय संगीत (Environmental Music) या इको-म्यूज़िक एक नया क्षेत्र बन रहा है, जिसमें संगीतकार पर्यावरणीय ध्वनियों को अपने संगीत में शामिल करते हैं। इस प्रकार का संगीत न केवल सुनने में सुखद होता है, बल्कि यह पर्यावरण के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करता है। इसके अलावा, कुछ संगीतकार पुराने और बेकार सामानों जैसे प्लास्टिक, धातु, और लकड़ी से वाद्ययंत्र बनाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हैं।

चुनौतियाँ और भविष्य

हालांकि संगीत पर्यावरण संरक्षण में मदद कर सकता है, लेकिन संगीत उद्योग स्वयं भी पर्यावरण को प्रभावित करता है। बड़े संगीतमय समारोहों और कॉन्सर्ट्स में भारी मात्रा में ऊर्जा खपत, प्लास्टिक कचरा, और कार्बन उत्सर्जन होता है। इसलिए, संगीत उद्योग को पर्यावरण के अनुकूल बनाना आवश्यक है। कई कलाकार और आयोजक अब हरित कॉन्सर्ट्स का आयोजन कर रहे हैं, जिसमें सौर ऊर्जा, पुनर्चक्रण, और कम कार्बन उत्सर्जन पर ध्यान दिया जाता है।

निष्कर्ष

पर्यावरण और संगीत का संबंध गहरा और बहुआयामी है। संगीत प्रकृति से प्रेरणा लेता है और बदले में पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों को प्रेरित करता है। यह एक ऐसा माध्यम है, जो न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि लोगों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार बनाता है। भविष्य में, यदि संगीत उद्योग और कलाकार पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को और गंभीरता से लें, तो यह संबंध और भी सशक्त हो सकता है। संगीत के माध्यम से हम न केवल अपनी संस्कृति को समृद्ध कर सकते हैं, बल्कि एक स्वच्छ और हरा-भरा ग्रह भी बना सकते हैं।

नींव के पल

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)
उदघाटन - समारोह

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)
उदघाटन - समारोह

सुशासन दिवस : सकारात्मक बनने का प्रयास करें - डॉ जी ए घनश्याम

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय दुर्ग द्वारा सुशासन दिवस मनाया गया | इस अवसर पर परिचर्चा ,स्लोगन एवं कविता प्रदर्शन का आयोजन किया गया | राज्य सरकार के कार्यकाल का एक सफल वर्ष पूर्ण होने पर छात्र छात्राओं ने अपने अपने अनूठे अंदाज़ में सहभागिता दिखाई | इस दिवस को अपनी गरिमामयी उपास्थिति से सुशोभित किया,छत्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षा विभाग के संयुक्त संचालक डॉ. जी. ए. घनश्याम का महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. ऋचा ठाकुर और कार्यालय प्रमुख यशवंत साहू ने उनका स्वागत किया | डॉ. घनश्याम ने विद्यार्थियों को अपनी उर्जा और भाषा के अनोखे प्रयोग से अत्यंत प्रभावित किया | अपने उदबोधन में उन्होंने सुशासन के महत्व को बताया एवं स्वलिखित कविता के सम्प्रेषण से उपस्थित जनों को भाषाओं में अपनी पकड़ का परिचय दिया | विद्यार्थियों में विभिन्न आयु वर्ग महाविद्यालय की प्राचार्य द्वारा उन्हें महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के सम्बन्ध में जानकारी के साथ समस्याओं के विषय से अवगत कराया गया | कार्यक्रम का सञ्चालन करते हुए वरिष्ठ छात्र तपन कुमार ने सुशासन के अर्थ को विस्तार से बताया | कु स्वाति, श्रीमती सीमा निषाद ,तुकेश्वर ने स्लोगन को पोस्टर एवं सम्प्रेषण के माध्यम से प्रस्तुत किया वहीं वरिष्ठतम छात्र जगदीश बामनिया ने उसी मौके पर ही कविता रच कर प्रस्तुति दी ,साथ ही पंकज, तामेश्वर ने भी कविता बोल कर सुनाई | जीव नंदन वर्मा एवं सुरेश बरसागड़े ने परिचर्चा के रूप में सुशासन की विस्तृत व्याख्या की | रजत कुमार ने अपनी सुमधुर बांसुरी वादन से सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया | लोक संगीत विभाग के विद्यार्थितो ने छत्तीसगढ़ी सोहर गीतों का गान किया | तामेश्वर साहू ने गीत प्रस्तुत किया | छात्र छात्राओं सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहा | कार्यक्रम का संयोजन डॉ निधि वर्मा एवं आभार जीव नन्दन ने किया |